एस. एन. कॉलेज जहानाबाद
हिन्दी विभाग
स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा भाग 1 के लिए
विषय :- 'चन्द्रगुप्त' नाटक
शिक्षण - व्हाट्स-एप
समय :- 11 बजे से 12 बजे तक — 8.7.20
शिक्षक - डॉ॰ रमेश शर्मा
पाठ - 'चन्द्रगुप्त' की स्त्री पात्र - मालविका

प्रिय छात्र-छात्राओं !

मालविका के माध्यम से प्रसाद जी ने अपने व्यक्तित्व की एकांत शीलिमता को मूर्त रूप दिया है। प्रणय-वेदना से इसके रोमतारों में जो कंपन बँधा वह छूटा नहीं। इसके जीवन की रागिनी में आदि से अंत तक प्रेम की एक कसक-भरी गूंज सुनाई पड़ती है। खिले हुए पुष्प-सी मकरन्द लुटाकर मुरझा जानेवाली मालविका का व्यक्तित्व नाटक के अन्य सभी स्त्री पात्रों से अलग है। ~~मालविका स्वर्गीय कुसुम मालविका का यह~~

मालविका - स्वर्गीय कुसुम मालविका - का एक उत्सर्ग अनौपचारिक प्रेम का आदर्श है। युद्ध में भी इसने सेवा का व्रत लिया है। चन्द्रगुप्त की शैय्या पर बैठने मात्र से उसमें जो मादकता जागरित होती है वह कितनी सहज और कितनी मनोवैज्ञानिक है तथा अभिराम भावुकता की पराकाष्ठा है। जिसके उत्सर्ग में एक शांति और तृप्ति दिखाई पड़ती है।

वनप्रांत की गहनता और भयंकरता के बीच जैसे एक क्षीण मधुर जल-स्रोत हो उसी प्रकार नाटक के गहन वस्तु-संघटना में स्वर्गीय कुसुम 'मालविका' की स्थिति है। सिंधु देश की बहक कर निकली हुई यह कोमल हृदया रमणी पंचनद के राजनीतिक मायाजाल में आकर फँस जाती है, जहाँ तक हो सका है अपने योग्य प्रिय पात्रों को यथासाध्य संतुष्ट करती हुई उनकी सेवा में लगी रहती है।

कहीं सेविका, कहीं सखी, कहीं दूती और कहीं ताम्बूल-वाहिनी बनकर लोगों का साथ देती रहती है। अपने निर्मल आचरण से सबके विश्वास का पात्र बन जाती है। यों तो सिंहरण की सहृदयता की भी प्रशंसा करती है मालविका परन्तु अनुराग वह चन्द्रगुप्त से जोड़ चुकी है। उसी के कार्यवश नर्तकी भी बनती है और उसी की रक्षा के विचार से हँसते-हँसते अपने जीवन का उत्सर्ग भी कर देती है। विशाल जन-समूह में एक हल्की सी सुगन्ध-धारा बनकर आती है और कुछ-कुछ सा प्रभाव छोड़कर विलीन हो जाती है। यही उसके जीवन की व्याख्या है और इसी में उसका व्यक्तित्व स्फुट हुआ है। मालव में मालविका का एक कथन उद्धरण है जिसमें वह अपने देश सिन्धु की प्रशंसा करती हुई दिखती है — द्वितीय अंक के चतुर्थ दृश्य में मालविका चन्द्रगुप्त से बात करती हुई यह कहती है — "नहीं मैं सिन्धु की रहनेवाली हूँ आर्य! वहाँ युद्ध-विग्रह नहीं, न्यायालयों की आवश्यकता नहीं। प्रचुर स्वर्ण के रहते भी कोई उसका उपयोग नहीं। इसलिए अर्थमूलक विवाद कभी उठते ही नहीं। मनुष्य के प्राकृतिक जीवन का सुन्दर पालना मेरा सिंधु-देश है।" इन पंक्तियों मालविका के हृदय का स्वच्छंद उच्छ्वास दीखता है जिसमें नाटककार प्रसाद का छायावाद भी बोलता है।

[signature]

8.7.20

24–31 दिसम्बर 8 दिन

...न तक ग्रीष्मावकाश (केवल शिक्षकों के लिए)

... अवकाश है।